हिंदीSEM-2 कविता के पड़ाव में

आपका है।

भावुक्ता अंगूर लता से- हरिवंशराय बच्चन

हरिवंश राय श्रीवास्तव "बच्चन" (२७ नवम्बर १९०७ – १८ जनवरी २००३) हिन्दी भाषा के एक कवि और लेखक थे।

'हालावाद' के प्रवर्तक बच्चन जी हिन्दी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों मे से एक हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति मधुशाला है। भारतीय फिल्म उदयोग के प्रख्यात अभिनेता अमिताभ बच्चन के पिता थे।

भावुक्ता अंगूर लता से- हरिवंशराय बच्चन

बच्चन का जन्म 27 नवम्बर 1907 को इलाहाबाद के नज़दीक प्रतापगढ़ जिले के एक छोटे से गाँव बाबूपट्टी में एक कायस्थ परिवार मे हुआ था। पिता का नाम प्रताप नारायण श्रीवास्तव तथा माता का नाम सरस्वती देवी था।
इनको बाल्यकाल में 'बच्चन' कहा जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ 'बच्चा' या संतान होता है। बाद में ये इसी नाम से मशहूर हुए।

भावुक्ता अंगूर लता से- हरिवंशराय बच्चन

१९२६ में १९ वर्ष की उम्र में उनका विवाह श्यामा बच्चन से हुआ जो उस समय १४ वर्ष की थीं।
लेकिन १९३६ में श्यामा की टीबी के कारण मृत्यु हो गई।
पांच साल बाद १९४१ में बच्चन ने एक पंजाबन तेजी सूरी से विवाह

तेजी बच्चन से अमिताभ तथा अजिताभ दो पुत्र हुए।
अमिताभ बच्चन एक प्रसिद्ध अभिनेता हैं।

भावुक्ता अंगूर लता से- हरिवंशराय बच्चन

कार्यक्षेत्र : इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन। बाद में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। अनन्तर राज्य सभा के मनोनीत सदस्य। बच्चन जी हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में अग्रणी हैं।

मधुशाला-
हरिवंशराय बच्चन

रचनाएँ-

मधुशाला,मधुबाला,मधुकलश,निशा-निमंत्रण,एकांत संगीत,आकुल अन्तर

पुरस्कार-

चौसठ रूसी कविताएँ पर सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार

दो चट्टाने पर साहित्य अकादमी

क्या भूलूँ क्या याद करू आत्मकथा पर सरस्वती सम्मान

भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण सम्मान

मधुशाला- हरिवंशराय बच्चन

मधुशाला हिंदी केप्रसिद्ध कवि और लेखक हरिवंश राय बच्चन (1907-2003) का अनुपम काव्य है।
इसमें एक सौ पैंतीस रूबाइयां (यानी चार पंक्तियों वाली कविताएं) हैं।
मधुशाला बीसवीं सदी की शुरुआत के हिन्दी साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण रचना है,
जिसमें सूफीवाद का दर्शन होता है।

मधुशाला-
हरिवंशराय बच्चन

पद-1

भावुकता अंगूर लता से
खींच कल्पना की हाला
कवि साकी बन कर आया है
भर कर कविता का प्याला ;
कभी न कण भर खाली होगा
लाख पिएं , दो लाख पिएं
पाठकगण हैं पीने वाले
पुस्तक मेरी मधुशाला ।

मधुशाला-
हरिवंशराय बच्चन

पद-

एक बरस में, एक बार ही
जगती होली की ज्वाला,
एक बार ही लगती बाज़ी,
जलती दीपों की माला,
दुनियावालों, किन्तु, किसी दिन
आ मदिरालय में देखो,
दिन को होली, रात दिवाली,
रोज़ मनाती मधुशाला

मधुशाला-
हरिवंशराय बच्चन

पद-

सजें न मस्जिद और नमाज़ी
कहता है अल्लाताला,
सजधजकर, पर, साकी आता,
बन ठनकर, पी ने वा ला,
शेख, कहाँ तुलना हो सकती
मस्जिद की मदिरालय से
चिर विधवा है मस्जिद तेरी,
सदा सुहागिन मधुशाला।

मधुशाला-
हरिवंशराय बच्चन

मुसलमान औ' हिन्दू है दो,
एक, मगर, उनका प्याला,
एक, मगर, उनका मदिरालय,
एक, मगर, उनकी हाला,
दोनों रहते एक न जब तक
मस्जिद मन्दिर में जाते,
बैर बढ़ाते मस्जिद मन्दिर
मेल कराती मधुशाला!

मधुशाला-
हरिवंशराय बच्चन

मेरे अधरों पर हो अंतिम
वस्तु न तुलसीदल,प्याला
मेरी जीव्हा पर हो अंतिम
वस्तु न गंगाजल हाला,
मेरे शव के पीछे चलने-
वालों, याद इसे रखना-
राम नाम है सत्य न कहना,
कहना सच्ची मधुशाला।

मधुशाला-
हरिवंशराय बच्चन

मेरे शव पर वह रोये,
हो जिसके आंसू में हाला
आह भरे वो, जो हो सुरिभत
मदिरा पी कर मतवाला,
दें मुझको वो कान्धा जिनके
पग मद डगमग होते हों
और जलूं उस ठौर, जहां पर
कभी रही हो मधुशाला।।4।